Physical Division, Drainage and Climate

भौगोलिक परिदृश्य (Physical Panorama)

- मिस्र एक समतल मरूस्थलीय दशाओं वाला देश है जिसका धीमा ढ़ाल उत्तर में भूमध्यसागर की ओर है।
- संपूर्ण मिस्र को चार प्रमुख भौतिक प्रदेशों में विभाजित किया जा सकता है–

❑ नील घाटी एवं डेल्टा **(Nile Valley and Delta)**

❑ पश्चिमी मरूस्थल **(Western Desert)**

❑ पूर्वी मरूस्थल **(Eastern Desert)**

❑ सनाई प्रायद्वीप **(Sania Peninsula)**

Mediterranean
Mersa Matruh
Alexandria
Delta
Al Arish
Cairo
Sinai
Siwa
Fayoum
Baharia
Eastern Desert
Sharm
Farafra
Minia
Nile Valley
El Gouna
Hurghada
Red Sea
Dakhla
Kharga
Luxor
Western Desert
Kom Ombo
Aswan
Abu Simbel

अपवाह तंत्र (Drainage System)

- कम वर्षा एवं मरूस्थलीय परिस्थितियों के कारण देश में नदियों की संख्या अत्यंत कम है। एक ही प्रमुख नदी है नील और एक उसकी सहायक नदी हैं।

नील नदी (Nile River)

- यह विश्व की सबसे लंबी **(Longest)** नदी है जिसे अरबी भाषा में बहर अल–नील **(Bhar AL-Nil)** या नहर अल–नील **(Nhar Al-Nil)** भी कहा जाता है। नील शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के **Neilos** शब्द से हुई है जिसका अर्थ है नदी की घाटी।
- इस नदी की रचना तीन धाराओं के मिलने से होता है। सफेद नील **(White Nile)** इस नदी की मुख्य धारा है जो विक्टोरिया झील से निकलती है और आगे अल्बर्ट झील से होकर बहती है।
- इसकी दूसरी धारा नीली नील **(Blue Nile)** है जो टाना झील से निकलकर सुडान की राजधानी खार्तुम के पास सफेद नील **(White Nile)** में मिल जाती है।
- टाना झील के उत्तर में इथोपिया उच्चभूमि से निकलकर अटबारा **(Atbarah)** की धारा भी सुडान में अटबारा नगर के पास नील में मिल जाती है।

अस्वान बाँध (Aswan Dam)

- मिस्र में अस्वान शहर के पास नील नदी पर सन् 1960 से 1970 तक विश्व के सबसे बड़े अस्वान बाँध का निर्माण किया गया है।

- इस बहुउद्देशीय परियोजना (पेयजल, सिंचाई एवं कृषि भूमि का विस्तार, विद्युत, मत्स्यपालन, पर्यटन, भूमिगत जलस्तर बढ़ाना, रोजगार सृजन) से मिस्र के लगभग 6 करोड़ लोग लाभान्वित हैं।

- लगभग 3830 मीटर लंबे, आधार पर लगभग 1 किलोमीटर चौड़े एवं 111 मीटर ऊँचे इस बाँध से विश्व की सबसे लंबी मानव निर्मित झील का निर्माण किया गया है जिसे नासिर झील **(Lake Nasser)** कहा जाता है।

जलवायु (Climate)

- कोपेन ने मिस्र को BWh अर्थात् निम्न अक्षांशीय शुष्क (Low-Latitude Dry Climate) जलवायु वर्ग में रखा है।
- सनाई पर्वत के ऊँचे स्थानों पर कभी–कभी सर्दीयों में बर्फ जम जाती है।
- गर्मी की ऋतु गर्म एवं शुष्क रहती है।

जलवायु (Climate)

- गर्मी (मुख्यतः अप्रैल में) में लगभग 50 दिन गर्म व शुष्क पवन चलती है। सहारा मरूस्थल से भूमध्यसागर की ओर चलने वाली इन पवनों को सामान्यतः सिरोक्को कहा जाता है लेकिन मिस्र में इसे 'खमसिन' **(Khamsin)** कहा जाता है।

- अरबी भाषा के इस शब्द का अर्थ 50 दिन होता है।

- धुरी भरी इन पवनों की गति कभी–कभी 140 किलोमीटर प्रति घंटा तक हो जाती है। ये गर्म पवने 2 घंटे में तापमान को 20° से. तक बढ़ा देती हैं।

- इन पवन से लोग एवं पशु बीमार पड़ने लगते हैं और अधिक गति के कारण ये फसलों, घरों एवं आधारभूत संरचनाओं के लिए नुकसानदायक हैं।